2 अगस्त 2014, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 37, अंक : 9 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अगस्त (प्रथम), 2014 (वीर नि. संवत्-2540) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

37वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर प्रारंभ

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में 'श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट' मुम्बई द्वारा दिनांक 27 जुलाई से 5 अगस्त 2014 तक होने वाले 37वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ।

शिक्षण शिविर का उद्घाटन श्री अशोककुमारजी जैन सुभाष ट्रासपोर्ट, भोपाल के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर सभा की अध्यक्षता श्री निहालचंदजी जैन जयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ व श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा उपस्थित थे। विद्वत्गणों के अन्तर्गत डॉ. भारिल्ल के साथ-साथ डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर आदि अनेक विद्वत्गण मंचासीन थे।

श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट का परिचय ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा ने दिया। मंचासीन समस्त अतिथियों का सम्मान शिविर के निर्देशक श्री अशोककुमारजी जैन जबलपुर ने तिलक लगाकर एवं माल्यार्पणकर किया।

उद्घाटन सभा के पूर्व शिविर मण्डप का उद्घाटन श्री देवेन्द्रकुमारजी बड़कुल भोपाल ने, मंच का उद्घाटन श्री राजूभाई वाडीलाल अहमदाबाद ने एवं ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी जैन जयपुर ने किया।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने शिविर के प्रारंभ व महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अधिक से अधिक विद्यार्थियों के हृदय में जिनवाणी अंकित करने पर ही जिनवाणी सुरक्षित रह पायेगी। अन्य अनेक महानुभावों ने भी शिविरों की उपयोगिता के संदर्भ में उद्बोधन दिया।

कार्यक्रम का संचालन श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा ने किया।

कनाडा में शिक्षण शिविर संपन्न

टोरंटो (कनाडा) : यहाँ जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका **(JAANA)** के तत्त्वावधान में दिनांक 3 से 5 जुलाई तक त्रिदिवसीय शिक्षण शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा प्रवचनसार की गाथा 99 पर प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी द्वारा स्वपरप्रकाशक, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा समयसार गाथा 320, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा नैगमादि सप्त नय विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

शिविर में लगभग 100-125 लोगों ने प्रतिदिन 7-7 घंटे प्रवचनों का लाभ लिया।

ब्रेम्पटन-टोरंटो (कनाडा) में -

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद संपन्न

ब्रेम्पटन (कनाडा) : यहाँ श्री एस.एस. जैन फाउण्डेशन ब्रेम्पटन द्वारा आयोजित एवं तीर्थधाम मंगलायतन के तत्त्वावधान में श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 6 से 13 जुलाई तक सानन्द संपन्न हुआ।

महोत्सव में गुरुदेवश्री के प्रवचनों के अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, ब्र. हेमन्तभाई गाँधी सोनगढ, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित देवेन्द्रजी मंगलायतन एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर विद्वानों के प्रवचनों व गोष्ठी के माध्यम से लाभ मिला।

इस अवसर पर भगवान के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्री सुभाष-भानुबेन कनाडा को, सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी बनने का सौभाग्य जिनमंदिर के निर्माणकर्ता श्री ज्ञानचन्द-कंचनबेन कनाडा को प्राप्त हुआ। ध्वजारोहण श्री ज्ञानचन्दजी के पौत्र रोहण नीयान द्वारा, अयोध्या नगर पाण्डाल का उद्घाटन श्री निरंजन अनिलभाई शिकागो परिवार द्वारा, मंच का उद्घाटन श्री मुकुन्दभाई खारा के पुत्र अतुलभाई चारुबेन खारा अमेरिका द्वारा एवं यागमण्डल का उद्घाटन डॉ. महेन्द्रजी जैन पद्मा जैन अमेरिका द्वारा किया गया। आहारदान का सौभाग्य श्री शान्तिलाल रतिलालजी शाह परिवार एवं अनन्तराय अमोलकजी सेठ परिवार तथा पण्डित कैलाशचन्द पवनकुमारजी जैन परिवार अलीगढ को प्राप्त हुआ।

महोत्सव के दौरान तीन गोष्ठियों का आयोजन हुआ, जिसमें प्रथम गोष्ठी **जैनधर्म की वर्तमान में उपयोगिता** विषय पर हुई, जिसकी अध्यक्षता डॉ. भारिल्ल ने एवं संचालन पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा ने किया। द्वितीय गोष्ठी आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की 125वीं जन्मजयन्ती के उपलक्ष्य में उनके **जीवन परिचय** पर गोष्ठी रखी गई, जिसकी अध्यक्षता डॉ. भारिल्ल ने एवं संचालन पण्डित देवेन्द्रजी मंगलायतन ने किया। तृतीय गोष्ठी **मुमुक्षु की पात्रता** विषय पर गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ. उत्तमचंदजी ने एवं संचालन पण्डित वीरेन्द्रजी ने किया। गोष्ठियों में डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा एवं पण्डित

(शेष पृष्ठ 7 पर ...)

सम्पादकीय –

राग–द्वेष की जड़ : पर कर्तृत्व की मान्यता

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

(ब) यदि मैं अपने प्रयत्नों से शरीर को स्वस्थ रख सकता हूँ तो प्रयत्नों के बावजूद भी यह अस्वस्थ क्यों हो जाता है? जब किसी को केंसर, कोढ़ एवं दमा–श्वांस जैसे प्राणघातक भयंकर दुःखद रोग हो जाते हैं तो वह उन्हें अपने प्रयत्नों से ठीक क्यों नहीं कर लेता?

(स) यदि मैं किसी का भला कर सकता होता तो सबसे पहले अपने कुटुम्ब का भला क्यों न कर लेता? फिर मेरे ही परिजन–पुरजन दुःखी क्यों रहते? मैंने अपनी शक्ति अनुसार उनका भला चाहने एवं भला करने में कसर भी कहाँ छोड़ी, पर मेरी इच्छानुसार मैं किसी का कुछ भी तो नहीं कर सका।

(द) इसीप्रकार, यदि कोई किसी का बुरा या अनिष्ट कर सकता होता तो आज संभवतः यह दुनिया ही इस रूप में न होती, सभी कुछ नष्ट–भ्रष्ट हो गया होता; क्योंकि दुनिया तो राग–द्वेष का ही दूसरा नाम है, ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिसका कोई शत्रु न हो; पर आज जगत यथावत् चल रहा है। इससे स्पष्ट है कि कोई किसी के भले–बुरे, जीवन–मरण व सुख–दुःख का कर्ता–हर्ता नहीं है। जो होना होता है वही होता है, किसी के करने से नहीं होता।

लोक में सभी कार्य स्वतः अपने–अपने षट्कारकों से ही सम्पन्न होते हैं। उनका कर्ता–धर्ता मैं नहीं हूँ। ऐसी श्रद्धा से ज्ञानी पर के कर्तृत्व के भार से निर्भार होकर अपने ज्ञायकस्वभाव का आश्रय लेता है। यही आत्मानुभूति का सहज उपाय है।

प्रत्येक द्रव्य व उनकी विभिन्न पर्यायों के परिणमन में उनके अपने–अपने कर्ता, कर्म, करण आदि स्वतंत्र षट्कारक हैं, जो उनके कार्य के नियामक कारण हैं। ऐसी श्रद्धा का बल बढ़ने से ही ज्ञानी ज्यों–ज्यों इन बहिरंग (पर) षट्कारकों की प्रक्रिया से पार होता है, त्यों–त्यों उसकी आत्मशुद्धि में वृद्धि हो जाती है।[१]

जब कार्य होना होता है, तब कार्य के नियामक अंतरंग षट्कारक, पुरुषार्थ, काललब्धि एवं निमित्तादि पाँचों समवाय स्वतः मिलते ही हैं और नहीं होना होता है तो अनंत प्रयत्नों के बावजूद भी कार्य नहीं होता तथा तदनुरूप कारण भी नहीं मिलते।

मिथ्यात्व एवं अनन्तानुबंधी कषाय के अभाव से अकर्तावाद सिद्धान्त की ऐसी श्रद्धा हो जाती है कि जिससे उसके असीम कष्ट सीमित रह जाते हैं। जो विकार शेष बचता है, उसकी उम्र भी लम्बी नहीं होती।

बस, इसलिए तो आचार्य कुन्दकुन्द ने समयसार में जीवाजीवाधिकार के तुरन्त बाद ही यह कर्ताकर्म अधिकार लिखने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। इसमें बताया गया है – जगत का प्रत्येक पदार्थ पूर्णतः स्वतंत्र है, उसमें होनेवाले नित्य नये परिवर्तन या परिणमन का कर्ता वह पदार्थ स्वयं है। कोई भी अन्य पदार्थ या द्रव्य किसी अन्य पदार्थ या द्रव्य का कर्ता–हर्ता नहीं है।

समयसार के कर्ता–कर्म अधिकार का मूल प्रतिपाद्य ही यह है कि परपदार्थ के कर्तृत्व की तो बात ही क्या कहें, अपने क्रोधादि भावों का कर्तृत्व भी ज्ञानियों के नहीं है। जबतक यह जीव ऐसा मानता है कि क्रोधादि का कर्ता व क्रोधादि भाव मेरे कर्म हैं, तब तक वह अज्ञानी है। तथा जब स्व–संवेदन ज्ञान द्वारा क्रोधादि आस्रवों से शुद्धात्म–स्वरूप को भिन्न जान लेता है, तब ज्ञानी होता है।

यद्यपि जीव व अजीव दोनों द्रव्य हैं, तथापि जीव के परिणामों के निमित्त से पुद्गल कर्मवर्गणाएँ स्वतः अपनी तत्समय की योग्यता से रागादि परिणामरूप परिणमित होती है। इसप्रकार जीव के व कर्म के कर्ता–कर्म सम्बन्ध नहीं है; क्योंकि न तो जीव पुद्गलकर्म के किसी गुण का उत्पादक है और न पुद्गल जीव के किसी गुण का उत्पादक है। केवल एक–दूसरे के निमित्त से दोनों का परिणमन अपनी–अपनी योग्यतानुसार होता है। इस कारण जीव सदा अपने भावों का ही कर्ता होता है, अन्य का नहीं।

यद्यपि आत्मा वस्तुतः केवल स्वयं का ही कर्ता–भोक्ता है, द्रव्यकर्मों का नहीं, तथापि द्रव्यकर्मों के उदय के निमित्त से आत्मा को सांसारिक सुख–दुःख का कर्ता–भोक्ता कहा जाता है, परन्तु ऐसा कहने का कारण पर का या द्रव्यकर्म का कर्तृत्व नहीं है, बल्कि आत्मा में जो अपनी अनादिकालीन मिथ्या मान्यता या अज्ञानता से राग–द्वेष–मोह कषायादि भावकर्म हो रहे हैं, उनके कारण यह सांसारिक सुख–दुख का कर्ता–भोक्ता होता है। वस्तुतः आत्मा किसी से उत्पन्न नहीं हुआ, अतः वह किसी का कार्य नहीं है तथा वह किसी को उत्पन्न नहीं करता, इस अपेक्षा वह किसी का कारण भी नहीं है। अतः दो द्रव्यों में मात्र निमित्त–नैमित्तिक सम्बन्ध है, कर्ता–कर्म सम्बन्ध नहीं है।

आत्मा जब तक कर्मप्रकृतियों के निमित्त से होने वाले विभिन्न पर्यायरूप उत्पाद–व्यय का परित्याग नहीं करता, उनके कर्तृत्व–

भोक्तृत्व की मान्यता को नहीं छोड़ता; तबतक वह अज्ञानी–मिथ्यादृष्टि एवं असंयमी रहता है। तथा जब वह अनंत कर्म व कर्मफल के कर्तृत्व–भोक्तृत्व के अहंकारादि एवं असंयमादि दोषों से निवृत्त होकर स्वरूपसन्मुख हो जाता है, तब वह तत्त्व ज्ञानी सम्यक्दृष्टि एवं संयमी होता है।

इसप्रकार **विराग** ने अनेक युक्तियों और आगम के प्रमाणों के आधार पर वस्तुस्वातंत्र्य के संदर्भ में – 'दो द्रव्यों में कर्त्ता–कर्म सम्बन्ध' होता ही नहीं है, मात्र निमित्त–नैमित्तिक सम्बन्ध होता है। यह भलीभाँति समझाया, जिसे सुनकर श्रोता बहुत प्रभावित तो हुए ही, लाभान्वित भी हुए। उन्होंने अभी तक ऐसे वीतरागतावर्द्धक और साम्यभावोत्पादक गंभीर व्याख्यान सुने ही नहीं थे। वे अबतक मात्र भगवान महावीर स्वामी की जीवनी और उनके अहिंसा–सिद्धान्त के नाम पर बहुत स्थूल चर्चा ही सुनते आये थे। अतः नवीन विषय सुनकर सभी श्रोता प्रसन्न थे।

आभार प्रदर्शन करते हुए संचालिका ज्योत्स्ना ने भविष्य में भी इसी तरह के लाभ की आशा और अपेक्षा की भावना व्यक्त की। अन्त में भगवान महावीर स्वामी की जयध्वनिपूर्वक सभा विसर्जित हुई। ●

छहढाला प्रवचन शिविर संपन्न

फुटेरा–दमोह (म.प्र.) : यहाँ श्री तारण तरण चैत्यालय में श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई द्वारा पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के 125वें जन्मजयन्ती वर्ष में आयोजित स्वाध्याय वर्ष के अन्तर्गत दिनांक 16 से 21 जून तक छहढाला शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में डॉ.मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, पण्डित राजेन्द्रजी शास्त्री खड़ैरी के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

स्वाध्याय वर्ष के अन्तर्गत देश के विभिन्न मण्डलों में छहढाला शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

जैनत्व जागरण संस्कार शिविर संपन्न

रायपुर (छत्तीसगढ.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में पहली बार एक साथ 8 स्थानों पर जैनत्व जागरण संस्कार शिविर दिनांक 1 से 6 जून तक आयोजित किया गया।

इस अवसर पर टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय एवं आचार्य अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा के अनेक विद्वानों द्वारा प्रवचनों एवं कक्षाओं के माध्यम से लाभ प्राप्त हुआ। शिविर में अनेक स्थानों के लगभग 500 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

शिविर का आयोजन पण्डित नितिनजी शास्त्री खडैरी ने किया।

– अशोककुमार जैन

2015 का प्रशिक्षण शिविर मेरठ में

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 29 जुलाई को मेरठ से पधारे 80 साधर्मियों के प्रतिनिधि मण्डल ने विशाल सभामण्डप में उपस्थित सभी साधर्मी भाईयों एवं समाज को 2015 के प्रशिक्षण शिविर में मेरठ पधारने का आमंत्रण दिया।

इस अवसर पर दिल्ली प्रशिक्षण शिविर के प्रतिनिधि मण्डल के श्री जिनेन्द्र जैन एवं संयोजक श्री प्रमोदजी जैन ने धर्मध्वजा डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल को सौंपी एवं उन्होंने यह ध्वजा मेरठ प्रतिनिधि मण्डल को प्रदान की।

कार्यक्रम में मेरठ प्रतिनिधि मण्डल के सभी 80 सदस्यों ने गाजे–बाजे के साथ पधारकर मंचासीन सभी विद्वत्गणों का सम्मान किया एवं सभी साधर्मियों को **दिनांक 24 मई से 10 जून 2015 तक मेरठ में** आयोजित होने जा रहे पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित एवं अ.भा. जैन युवा फैडरेशन, मेरठ द्वारा आयोजित **49वें आध्यात्मिक शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर** में पधारने का आमंत्रण दिया।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की ओर से प्रतिनिधि मण्डल के नेता मेरठ दिगम्बर जैन समाज के अध्यक्ष श्री सुरेशजी जैन 'ऋतुराज' को प्रशस्ति–पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया एवं श्री प्रमोदजी जैन एडवोकेट और श्री प्रेमचंदजी जैन का भी अभिनन्दन किया गया।

उक्त अवसर पर श्री सुशीलकुमारजी गोदीका जयपुर, तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, श्री अशोकजी जबलपुर आदि महानुभाव मंचासीन थे।

मेरठ से पधारे प्रमुख प्रतिनिधिगण श्री प्रेमचंदजी जैन एवं श्री प्रमोदजी जैन एडवोकेट का श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने माल्यार्पण द्वारा एवं पण्डित शांतिकुमारजी पाटील व पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने तिलक लगाकर स्वागत किया।

कार्यक्रम का संचालन टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के
125वें जन्मजयन्ती वर्ष में आप अपने नगर में
छहढाला प्रवचन शिविर
का आयोजन करें।
विशेष जानकारी के लिये संपर्क करें –
(1) अभयकुमार शास्त्री, देवलाली – 09420225393
(2) विराग शास्त्री, जबलपुर – 09300642434
E-mail : kahansandesh@gmail.com
–: आयोजक :–
श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन क्या, क्यों और कैसे ?
शृंखला की तीसरी कड़ी –

हम अपनी आवश्यकताओं का आकलन करें और अपने जीवन के लिये लक्ष्य निर्धारित करें

– परमात्म प्रकाश भारिल्ल
(महामंत्री–अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन)

यह सुनिश्चित करने के लिये कि हम सही मार्ग पर बने रहें, भटकें नहीं, **यह अत्यंत आवश्यक है कि हम अपने आपको पहिचाने, अपनी आवश्यकताओं को समझें और यह तय करें कि हमें अपने इस जीवन में क्या उपलब्ध करना है।**

जब तक हम अपनी आवश्यकताओं और लक्ष्यों को निर्धारित नहीं करते हैं तब तक हम अनंत में हाथ पांव मारते रहते हैं और हम कुछ भी क्यों न पा लें हमें तृप्ति ही नहीं होती है और न ही कभी हमारे प्रयत्नों को विराम मिलता है।

ऐसी स्थिति में हम भटक जाते हैं, बहक जाते हैं, हर जगह मुंह मारते हैं, सब की ओर आशा भरी निगाहों से देखते हैं, तब न तो हमें पात्र–अपात्र की सुध रहती है और न ही अच्छे–बुरे का भान, न उचित–अनुचित की परवाह रहती है और न ही न्याय–अन्याय की चिंता। तब हम न तो इहभव के हितों की संभाल कर पाते हैं और न ही पर भव की।

यकीन मानिये ! सीमाओं में रहकर भी जीवन जीना संभव है, सम्पूर्ण जीवन संभव है, इसका उत्कृष्टतम उदाहरण है मुनिराज का जीवन और सर्वसामान्य उदाहरण है पशुओं का जीवन।

यदि हम गंभीरता से विचार करें तो पायेंगे कि जीवन तो सभी लोग अपने–अपने सीमित दायरों में रहकर ही जीते हैं, चाहे वे राजा हों या रंक, अमीर हों या फकीर, वही सीमित प्रकार का खान–पान, सीमित भोजन, रहन–सहन, रुचि–अरुचि, सीमित संपर्क, सीमित दोस्त या शत्रु, सीमित संबंधी, सीमित ज्ञान, सीमित सोच, सीमित व्यवहार, सब कुछ सीमित, **यह तो मात्र हमारी अनंत तृष्णा और असीमित महत्वाकांक्षा है जो हमें सीमाओं का उल्लंघन करने के लिये प्रेरित और मजबूर करती है।**

तृष्णा और महत्वाकांक्षा का तो मात्र शमन ही संभव है पूर्ति नहीं।

तब क्या जरूरत है कि हम अपनी सीमाओं को तोड़े, उनका उल्लंघन करें।

क्यों हम सात्विक समाज से बाहर जाकर व्यसनी लोगों से संपर्क बढायें, सात्विक भोजन छोड़कर अभक्ष्य का भक्षण करें, गरिमामय सम्बन्धों और व्यवहार को छोड़कर फूहड़ व्यवहार अपनाएं, सात्विक और अहिंसक धंधा–व्यापार छोड़कर हिंसक और अनैतिक व्यवसाय करें, अपनों को और अपना घर छोड़कर दूर देश जाएं, क्यों करे हम यह सब ? **क्या नीति–न्यायपूर्वक जीवन जीना संभव नहीं है ?**

यदि किसी भी तरह हमारी आवश्यकताएं सीमित हो जाएं तब हम चुनाव करने की स्थिति में (choosy) हो जायेंगे कि हम क्या करें और क्या न करें।

यह निश्चित है कि हम अपने लिये कोई भी लक्ष्य तय करें, उन्हें पाने के लिये हमारी सभी प्रकार की आवश्यकतायें भी सीमित हो जायेंगी, वह आवश्यकता चाहे धन की हो, शिक्षा की हो, रोजगार की हो, काम करने के समय (working hours) की हो, यात्राओं की हो, माइग्रेशन की हो, जनसंपर्क की हो, मनोरंजन की हो या कोई अन्य हो।

जब हमारी आवश्यकताएं सीमित हो जायेंगी तो हमारे पास अवसर होगा कि हम गुण–दोष के आधार पर चुनाव कर सकें अपने लिये उपयुक्त धंधे–व्यापार का, कार्यक्षेत्र का, अपने संपर्कों का, अपने साथियों का, मित्रों का, काम के समय का, क्षेत्र और काल का।

ऐसा होने पर हम अनंत में भटकने से बच जायेंगे।

मुझे पूर्ण भरोसा है कि ऐसा होने पर हमें अपने परिवार, समाज और देश की सीमाओं से बाहर झाँकने की जरूरत नहीं पड़ेगी, अपनी संस्कृति और संस्कारों के उल्लंघन की आवश्यकता नहीं रहेगी, अपने मूल्यों के साथ समझौता करने की नौबत नहीं आयेगी।

हम अपनी वर्तमान भूमिका के अनुरूप अपने इहभव के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए अपने परभव को भी संभाल सकेंगे, अपने त्रिकाली आत्मा के अविनाशी कल्याण के मार्ग पर आगे बढ सकेंगे

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के रूप में हमारा स्वप्न एक ऐसे समाज की रचना का है जो अपने आपमें सम्पूर्ण हो, जो अपने सदस्यों की हर प्रकार की आर्थिक, सामाजिक और पारमार्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम हो ताकि उन्हें अपनी जरूरतों को पूरी करने के लिये अपनी सांस्कृतिक विरासत की सीमाओं का उल्लंघन न करना पड़े।

मेरा आह्वान है कि आइये ! युवा फैडरेशन से जुड़िये, औरों को इससे जोड़िये, इसे सम्पूर्ण बनाने में अपना योगदान दीजिये और साथ ही अपने जीवन को भी परिपूर्ण बनाइये।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

दशलक्षण पर्व हेतु आमंत्रण शीघ्र भेजें

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण–पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके।

पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) भेजें एवं तत्काल संपर्क की सुविधा हेतु ई–मेल आई.डी. हो तो अवश्य भेज देवें।

अनेक बार समाज द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु विद्वानों को अपने यहाँ बुलाने का आमंत्रण अन्तिम समय पर प्राप्त होता है, जिससे व्यवस्था करने में कठिनाई होती है; अत: समाज/मंदिर के व्यवस्थापकों से निवेदन है कि वे अपने यहाँ से आमंत्रण–पत्र तत्काल भिजवायें। इसके अतिरिक्त विद्वत्गण भी अपनी स्वीकृति शीघ्र ही भेजें। **– महामंत्री, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट**

पत्राचार का पता – **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.–0141–2705581, 2707458, फैक्स – 0141–2704127 E-mail : ptstjaipur@yahoo.com**

धन्यवाद !

(1) जयपुर (राज.) निवासी श्री महेन्द्रकुमारजी भूरा की पुण्य–तिथि (दिनांक 11–11–1997) के उपलक्ष्य में श्रीमती कंचन भूरा, मधुप भूरा, डॉली, डिम्पल, अमीषा भूरा परिवार द्वारा एक विद्यार्थी हेतु 30 हजार रुपये की राशि टोडरमल महाविद्यालय को प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद!

(2) सूरत (गुज.) निवासी श्री धनकुमारजी जैन जयपुर वालों के पौत्र के जन्म के उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग–विज्ञान हेतु 2 हजार रुपये प्राप्त हुये, एतदर्थ धन्यवाद !

दशलक्षण पर्व हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र भेजें

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों से अनुरोध है कि वे इस वर्ष भी दशलक्षण पर्व में जाने हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र जयपुर कार्यालय को पत्र/फोन/ई–मेल द्वारा भेजें।

यद्यपि सभी विद्वानों को जयपुर कार्यालय से अनुरोध पत्र भेजे गए हैं परन्तु यदि डाक की गड़बड़ी से समय पर न मिले हो तो भी अपनी स्वीकृति हमें शीघ्र नोट करा देवें। **– महामंत्री, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट**

स्वीकृति भेजने का पता – **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.–0141–2705581, 2707458, फैक्स – 0141–2704127 E-mail : ptstjaipur@yahoo.com**

वीर शासन जयन्ती संपन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ श्री महावीर विद्या निकेतन में दिनांक 13 जुलाई को वीर शासन जयन्ती अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक मनाई गई।

इस अवसर पर सर्वप्रथम विद्या निकेतन के छात्रों द्वारा प्रभातफेरी व सामूहिक पूजन का कार्यक्रम हुआ। तत्पश्चात् 'वीर शासन जयन्ती क्यों और कैसे मनाई जाती है एवं इसका हमारे जीवन में क्या महत्व है' विषय पर अनेक छात्रों ने अपने विचार व्यक्त किये, साथ ही डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर ने भी उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित किया।

कार्यक्रम में 10वीं एवं 12वीं कक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण छात्रों को सम्मानित भी किया गया। सभा का संचालन पण्डित मनीषजी शास्त्री द्वारा किया गया। **– आशीष शास्त्री**

अष्टाह्निका महापर्व सानन्द संपन्न

(1) गुना (म.प्र.) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में श्री वर्धमान दिगम्बर जिन मंदिर में दिनांक 5 से 12 जुलाई तक श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित कान्तिकुमारजी जैन इन्दौर, पण्डित रमेशचंदजी जयपुर, पण्डित अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित आकेशजी छिन्दवाडा व स्थानीय विद्वानों का भी सानिध्य प्राप्त हुआ।

विधि–विधान के कार्य ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में पूर्ण हुये।

(2) मैनपुरी (उ.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर सरावग्यान में युवा फैडरेशन शाखा मैनपुरी द्वारा दिनांक 5 से 13 जुलाई तक विशेष कार्यक्रम संपन्न हुये।

इसअवसर पर पण्डित प्रकाशचंदजी 'ज्योतिर्विद' मैनपुरी द्वारा प्रात: परमात्मप्रकाश एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचन हुये।

वेदी प्रतिष्ठा संपन्न

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ चौक स्थित श्री 1008 भगवान महावीर स्वामी दिगम्बर जैन समवशरण मंदिर का दिनांक 6 से 8 जून तक वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर के प्रवचनों का लाभ मिला।

कार्यक्रम में समवशरण की भव्य रचना के मध्य ढाई फीट ऊँची श्वेत पाषाण की भगवान महावीर स्वामी की चतुर्मुखी प्रतिमा वेदी पर विराजमान की गई।

विधि–विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में संपन्न हुये।

आवश्यकता

निर्माण संबंधी एवं ऑफिस संबंधी कार्य देख व करवा सके – ऐसे जैन एवं कुशल अनुभवी व्यक्ति की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार। (शास्त्री विद्वान को प्राथमिकता) शीघ्र संपर्क करें – राजेश जैन 09829273655 / डॉ. संजीव गोधा 9829064980

दृष्टि का विषय

1 प्रथम प्रवचन –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

जब–जब भी, दृष्टि के विषय की चर्चा चलती है; तब–तब यह बात प्रमुख रहती है कि दृष्टि के विषय में पर्याय शामिल है या नहीं ?

आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने 'समयसार' नामक ग्रंथाधिराज की पाँचवीं गाथा में कहा है कि **मैं एकत्व–विभक्त भगवान आत्मा को** निज वैभव से दिखाऊँगा और पहली गाथा में यह भी स्पष्ट कर दिया है कि मैं **श्रुतकेवलियों द्वारा कथित बात ही कहूँगा,** अपने मन की काल्पनिक बात नहीं कहूँगा।

पण्डितप्रवर श्री टोडरमलजी ने भी मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रंथ में अपने **'ग्रंथ की प्रामाणिकता'** की चर्चा की है। आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी भी जब कोई गम्भीर बात कहते थे तो वे उसके साथ एक वाक्य यह भी बोला करते थे कि **मैं जो यह बात कह रहा हूँ; यह बात, सौ इन्द्रों की उपस्थिति में, चार ज्ञान के धारी गणधरदेवों की उपस्थिति में तीर्थंकर परमात्मा की दिव्यध्वनि में समागत बात है।** इसे मेरी बात समझ कर नहीं सुनना, अपितु इसकी प्रामाणिकता केवली भगवान की वाणी के आधार पर है – ऐसा मानकर सुनना।

यदि स्वामीजी को कोई ऐसी बात ख्याल में आती, जो आगम में नहीं मिली हो; तो वे उस बात को कहकर साथ में ऐसा भी कहते थे कि तुम इसे विचार की कोटि में रखना; क्योंकि मुझे अभी तक इस बारे में कोई आगम प्रमाण नहीं मिला है, यदि इस संबंध में तुम्हें **कोई आगम प्रमाण मिल जाये तो उससे प्रमाणित कर लेना, अन्यथा मेरे कथन को विचार की कोटि में ही रखना।**

ऐसा कहकर वे अपने अन्दर के विकल्प को विचार का बिन्दु बनाने के लिए कहते थे; लेकिन उसे स्वीकार करने का आग्रह कभी नहीं करते थे।

उन्होंने अहंकारपूर्वक ऐसा कभी नहीं कहा कि भगवान ने कुछ भी कहा हो, आगम में कुछ भी मिलता हो; लेकिन मेरे अनुभव में तो यह आता है और अनुभव की बात ही प्रमाण होती है; इसलिए तुम मेरी बात ही प्रमाण मानना और **आगम की बात प्रमाण नहीं मानना।**

आज कुछ लोग ऐसा कहने लगे हैं कि यदि आगम और ज्ञानी की बात में भिन्नता आ जावे तो ज्ञानी के वचन को ही प्रमाण मानना। इसप्रकार के प्रतिपादन के द्वारा वे लोग उनके द्वारा स्थापित तथाकथित ज्ञानियों के आगमविरुद्ध कथनों को मान्यता दिलाना चाहते हैं; जो किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है।

इसप्रकार हम देखते हैं कि क्रान्तिकारी विचारक श्री टोडरमलजी और आध्यात्मरसिक स्वामीजी जो भी कथन करते हैं, उसमें **वे जिनवाणी को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करते हैं।**

आचार्य कुन्दकुन्द ने भी नियमसार गाथा १ में **'केवली और श्रुतकेवली द्वारा कथित'** कहकर तथा समयसार में **'श्रुतकेवली द्वारा कथित'** कहकर उसी वाणी के प्रति निष्ठा व्यक्त की, जो वाणी जिनागम के रूप में हमें आज उपलब्ध है।

समयसार की पाँचवीं गाथा में जो प्रतिज्ञा आचार्यदेव ने की थी; वह प्रतिज्ञा; संक्षिप्त रुचिवाले शिष्यों के लिए तो उन्होंने छठवीं और सातवीं गाथा में ही पूर्ण कर दी, फिर विस्तार रुचिवाले शिष्यों के लिए संपूर्ण समयसार लिखा।

छठवीं–सातवीं गाथाओं की विषयवस्तु इसप्रकार है कि **जो ज्ञायक भाव है, वह अप्रमत्त भी नहीं और प्रमत्त भी नहीं है; इसप्रकार इसे शुद्ध कहते हैं और जो ज्ञायकरूप से ज्ञात हुआ, वह तो वही है, अन्य कोई नहीं। ज्ञानी के चारित्र, दर्शन, ज्ञान – ये तीनों भाव व्यवहार से कहे जाते हैं; निश्चय से ज्ञान भी नहीं है, चारित्र भी नहीं है और दर्शन भी नहीं है; ज्ञानी तो एक शुद्ध ज्ञायक ही है।**

दृष्टि के विषय में पर्याय शामिल है या नहीं ?

उक्त संदर्भ में पर्याय के अर्थ के संबंध में ही सबसे बड़ा भ्रम है; क्योंकि शास्त्रों में बहुत–सी अपेक्षाओं से पर्याय का वर्णन आता है।

इसलिए सबसे पहले हम दृष्टि के विषय के संदर्भ में 'पर्याय' शब्द का सही अर्थ क्या है ? – यह समझेंगे।

यह तो आप जानते ही होंगे कि **जो–जो वस्तुएँ पर्यायार्थिकनय का विषय हैं; उन सबकी पर्याय संज्ञा है और जो–जो वस्तुएँ द्रव्यार्थिकनय का विषय हैं, उन सबकी द्रव्य संज्ञा हैं।**

तात्पर्य यह है कि **समस्त अर्थपर्यायों और व्यंजनपर्यायों के साथ–साथ गुणभेद और प्रदेशभेद आदि भी पर्यायार्थिकनय के विषय हैं; इसलिए वे भी पर्यायें ही हैं।**

द्रव्यदृष्टि से और पर्यायदृष्टि से – इसप्रकार जो 'दृष्टि' शब्द का प्रयोग है, वह सम्यग्दर्शन का सूचक नहीं है, अपितु अपेक्षा

का सूचक है। द्रव्यदृष्टि अर्थात् द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा से और पर्यायदृष्टि अर्थात् पर्यायार्थिक नय की अपेक्षा से।

इस प्रकरण को समझने से पूर्व यह समझना अत्यन्त आवश्यक है कि नय ज्ञानात्मक होते हैं और पाँचों ही प्रकार के ज्ञान प्रमाण हैं। एक भी ज्ञान, प्रमाण की सीमा से बाहर नहीं हैं; क्योंकि प्रमाण की परिभाषा है – **'सम्यग्ज्ञानं प्रमाणम्'** अर्थात् मतिज्ञान से लेकर केवलज्ञान तक जो भी ज्ञान सम्यक् हैं; वे सभी ज्ञान प्रमाणज्ञान हैं।

उन पाँच प्रकार के ज्ञानों में एक श्रुतज्ञान नाम का जो ज्ञान है, उसमें ही नय होते हैं, शेष चार ज्ञानों में नय नहीं होते। कहा भी है कि **'श्रुतविकल्पा: नया:'** – श्रुतज्ञान के विकल्प को नय कहते हैं।

'विकल्प' का अर्थ भेद होता है। श्रुतज्ञान, वस्तु में भेद करके एक अंश को मुख्य करता है और दूसरे अंश को गौण करता है।

यह मुख्य-गौण की व्यवस्था मात्र श्रुतज्ञान प्रमाण में है, अन्य किसी भी ज्ञान में नहीं है।

आचार्य अमृतचन्द्रदेव ने जब श्रुतज्ञान के स्व-परप्रकाशकपने का स्वरूप स्पष्ट किया, तब उन्होंने केवली भगवान का उदाहरण दिया है।

जिसप्रकार केवली भगवान, केवलज्ञान में स्व और पर को एक साथ जानते हैं; ऐसे ही श्रुतज्ञानी के श्रुतज्ञान में भी स्व और पर एक साथ भासित होते हैं, एक साथ जाने जाते हैं।

वहाँ उन्होंने 'केवली' का उदाहरण इसलिए दिया; क्योंकि मुख्य-गौण करते-करते हमारी ऐसी आदत हो गई है कि हम केवलज्ञान में भी मुख्य-गौण करने लग गये और सोचने लगे हैं कि केवली भगवान अपनी आत्मा को मुख्यरूप से जानते होंगे और गौणरूप से दुनिया जानने में आ जाती होगी; पर ऐसा नहीं है।

केवलज्ञान में मुख्य-गौण की व्यवस्था ही नहीं है; क्योंकि वह तो प्रमाणज्ञान है और प्रमाणज्ञान में सभी पक्ष मुख्य ही रहते हैं।

जो अपने माँ-बाप का इकलौता बेटा होता है, वह कहता है कि मैं ही छोटा भाई हूँ और मैं ही बड़ा भाई हूँ, मैं ही भाई हूँ, मैं ही बहन हूँ; इसका अर्थ यह है कि उसके यहाँ छोटे-बड़े और भाई-बहिन का कोई भेद ही नहीं है; क्योंकि वह तो अपने माँ-बाप की एकमात्र संतान है। छोटे-बड़े का भेद तो तब होता, जब वे अनेक भाई-बहिन होते।

केवलज्ञानी को स्व और पर – दोनों ही एक साथ एक से जानने में आ रहे हैं; अत: दोनों मुख्य हैं।

श्रुतज्ञान में भी जिस समय द्रव्यदृष्टि का विषय मुख्यता से जानने में आ रहा है; उसी समय पर्यायदृष्टि का विषय भी गौणपने जानने में आ रहा है। ऐसा नहीं है कि पर्यायदृष्टि का विषय जानने में ही नहीं आ रहा है। इसलिए आचार्यदेव ने ९-१०वीं गाथा व १४४वीं गाथा की टीका में श्रुतज्ञान का स्वरूप समझाने के लिए केवली भगवान के ज्ञान का उदाहरण बार-बार दिया है।

यहाँ एक बात और विशेष दृष्टव्य है कि ये दोनों नय एक ही व्यक्ति में और एक ही काल में घटित होते हैं। **जिससमय केवली भगवान निश्चयनय से अपनी आत्मा को जानते हैं, उसीसमय में वे ही केवली भगवान व्यवहारनय से लोकालोक को जानते हैं। केवली भगवान के ज्ञान में मुख्य-गौण रहता ही नहीं है।**

ऐसा नहीं है कि वे व्यवहार को गौण करते होंगे और निश्चय को मुख्य रखते होंगे। **ये निश्चय-व्यवहार तो केवली भगवान के ज्ञान में हैं ही नहीं।**

नियमसार गाथा १५९ तथा अन्यत्र केवली भगवान पर निश्चय-व्यवहार तो हमने अपनी ओर से लगाए हैं। मैं ऐसा नहीं कहता कि हमने ऐसा करके कोई गलती की है; क्योंकि ये तो आचार्यों ने लगाए हैं। **वास्तव में केवली के तो नय हैं ही नहीं। वे तो प्रतिसमय स्व और पर – दोनों को एकसाथ ही जान रहे हैं।**

ध्यान रहे, नय, श्रुतज्ञानरूप परोक्षज्ञान में ही होते हैं; प्रत्यक्षज्ञान में नय नहीं होते; अत: केवलज्ञान में नय होने का प्रश्न ही नहीं उठता। **(क्रमश:)**

शोक समाचार

रायपुर निवासी श्रीमती विमलादेवी दूगड धर्मपत्नी श्री कन्हैयालालजी दूगड (सरदारशहर वाले) का दिनांक 30 जून को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 500-500/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनन्द को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

देवेन्द्रकुमारजी मंगलायतन के मार्मिक उद्बोधन का लाभ मिला।

पञ्चकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्र. हेमन्तभाई गांधी द्वारा पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा व पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा द्वारा, इन्द्रसभा-राजसभा का संचालन पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, मंच संचालन पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा द्वारा पण्डित अशोकजी लुहाड़िया के निर्देशन में संपन्न हुई।

2 अगस्त 2014, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. PC / FN-32 / 2012-14

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के संबंध में उनके समकालीन मनीषियों द्वारा व्यक्त किये गये हृदयोद्गार –

अन्तर्बाह्य व्यक्तित्व के धनी : कानजीस्वामी

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे)

श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय में जन्मा बालक कहान बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति का शान्त बालक था। माता उजमबाई और पिता मोतीचन्दजी श्रीमाल को एक ज्योतिषी ने बालक कहान के महापुरुष होने का स्पष्ट संकेत किया था, अत: उनका पुत्र प्रेम सहज द्विगुणित हो गया था।

साधारण शिक्षा के उपरान्त उनके जन्म स्थान के ही निकटस्थ कस्बा पालेज में उनके बड़े भाई खुशालचन्दजी के साथ उन्हें भी दुकान पर बिठा दिया गया, पर उनका मन उसमें नहीं रमा। वे उदासवृत्ति से, पर कुशलता-पूर्वक, ईमानदारी और पूरी प्रामाणिकता के साथ कार्य करने लगे।

सोलह वर्ष की वय में एकबार उन्हें बड़ौदा की कोर्ट में जाना पड़ा। वहाँ उन्होंने समस्त सत्य को बड़े धैर्य और गम्भीरता के साथ रखा। न्यायाधीश पर उनकी सरलता, सहजता और स्पष्टवादिता का ऐसा असर हुआ कि बिना गवाह के ही उनकी बात को प्रमाण मानकर निर्णय दे दिया गया।

उठते यौवन में उन्होंने 'भक्त ध्रुव' आदि नाटक भी देखे। सामान्य युवकों का मन नाटकों के श्रृंगारिक प्रसंगों में ही अधिक रमा करता है पर उनका मन वैराग्यपोषक प्रकरणों में ही अधिक रमा करता था, जिसकी चर्चा वे आज भी बड़े ही भाव-विभोर हो, कभी-कभी अपने प्रवचनों में किया करते हैं।

अन्तर्व्यापार के अभिलाषी कहान का मन बाह्य व्यापार में न रमा। जब उनसे शादी का प्रस्ताव किया गया तो उन्होंने साफ-साफ कह दिया कि मुझे तो दीक्षा लेने का भाव है, मैं शादी नहीं करूँगा।

अरे...अरे...! उन्होंने दीक्षा लेने की मात्र बात नहीं कही, 22 वर्षीय उठते यौवन में ही उन्होंने स्थानकवासी साधु हीराचन्दजी के पास वि.सं. 1970 में अगहन सुदी 9 रविवार के दिन बड़े ही ठाठ-बाट से दीक्षा ले ली; पर दीक्षा-जुलूस में हाथी पर सवार होते समय दीक्षा-वस्त्र फट गया। उस समय तो किसी की समझ में कुछ न आया, पर अब कभी-कभी स्वामीजी स्वयं कहते हैं कि मुझे तभी शंका हो गई थी कि सच्चा साधुपना यह नहीं है। **(क्रमश:)**

अमेरिका में धर्मप्रभावना

(1) डलास : यहाँ दिनांक 21 से 27 जुलाई तक शिविर एवं वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर द्वारा 1 से 4 गुणस्थान, नयचक्र, तत्त्वार्थसूत्र एवं सम्यक्त्व की पात्रता आदि विषयों पर 7 घंटे प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

दिनांक 27 जुलाई को वेदी शुद्धि व यागमण्डल विधान पूर्वक श्री पार्श्वनाथ भगवान व श्री सीमंधर भगवान की प्रतिमाएं विराजमान की गईं। कार्यक्रम में लगभग 150-200 साधर्मियों ने लाभ लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्य डॉ. संजीवजी गोधा द्वारा कराये गये।

दिनांक 28 जुलाई को प्रात: 'अविभागी प्रतिच्छेद' विषय पर आपका विशेष व्याख्यान हुआ।

(2) शिकागो : यहाँ दिनांक 14 से 20 जुलाई तक प्रतिदिन तत्त्वार्थसूत्र के प्रथम व द्वितीय अध्याय के आधार से मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही सम्यग्दर्शन, आत्मानुभूति एवं ध्यान विषय पर भी विशेष चर्चायें हुई।

(3) मियामी (फ्लोरिडा) : यहाँ दिनांक 26 जून से 2 जुलाई तक प्रतिदिन प्रात:काल बारह भावना एवं सायंकाल नोकर्म, भावकर्म व द्रव्यकर्म विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

पंचपरमागम ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण

आचार्य कुन्दकुन्ददेव विरचित पंचपरमागम ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण हो चुके हैं। इनकी प्रति का ऑर्डर देने हेतु संपर्क करें –

मनोज जैन - Phone: +917599301008

E-mail - ptmanojjain@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 28 जुलाई 2014

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127